श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति,
राजस्थान का उद्‌बोधन

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर का
नवां दीक्षांत समारोह

दिनांक 03 दिसम्बर, 2019 **समय प्रात : 11.00 बजे**

म.द.स. विश्वविद्यालय परिसर, अजमेर

माननीय उच्च शिक्षा मंत्री श्री भंवर सिंह भाटी जी, मैग्सेसे पुरस्कृत श्री राजेन्द्र सिंह जी, कुलपति प्रो. आर. पी. सिंह जी, प्रबंध बोर्ड एवं शैक्षणिक परिषद् के सदस्यगण, संकाय अधिष्ठातागण, शिक्षकगण, कुलसचिव, अतिथिगण, पदक एवं उपाधि प्राप्त कर रहे विद्यार्थीगण, उनके अभिभावकगण, भाइयो, बहनो, पत्रकार बन्धुओ और छायाकार मित्रो।

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय के इस नवें दीक्षांत समारोह में सर्वप्रथम मैं पदक एवं उपाधियां प्राप्त करने वाले सभी विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई और आशीर्वाद प्रदान करता हूं।

अजमेर की माटी में सौहार्द्र, संस्कृति और शिक्षा के संगम की सौंधी महक है। इस पुण्यभूमि पर स्थित इस विश्वविद्यालय का नाम महर्षि दयानन्द सरस्वती का पुण्य स्मरण कराता है।

महर्षि दयानन्द ने प्राचीन भारत के उन्नत गौरव और वैदिक ज्ञान–गरिमा का प्रकाश पूरे विश्व में फैलाया। महर्षि

दयानन्द को प्रेरणास्रोत मानकर इस विश्वविद्यालय के छात्र–छात्राओं और शिक्षकों को ज्ञान के प्रकाश की परम्परा का निर्वहन करना है।

हमारे यहां कहा गया है कि '' ऋते ज्ञानान्न न मोक्षः '' अर्थात ज्ञान के बिना मुक्ति नही मिलती है। हमें अज्ञानता से, अंधकार से, भय से, भ्रम से, नैराश्य एवं अवसाद से समाज को मुक्ति दिलानी है। इसी ज्ञान के आलोक में वैदिक ऋषियों का नाद गूंजता है।

'' असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतं गमय '' यह असत् से सत् की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर तथा मृत्यु से जीवन की ओर बढ़ने की कामना है। इस प्रार्थना की पूर्ति शिक्षा और ज्ञान की साधना से ही संभव है। हॉब्स ने कहा था कि " Knowledge is power " अर्थात् ज्ञान ही शक्ति है।

इस दीक्षांत समारोह में दीक्षित होने वाले सभी विद्यार्थियों से मेरी यही अपेक्षा है कि वे अर्जित शिक्षा और ज्ञान के बल का सदुपयोग स्वयं के, समाज के, राष्ट्र के

और सम्पूर्ण मानवता के कल्याण के लिए करें। शिक्षा का लक्ष्य सिर्फ उपाधि पाकर जीविका का उपार्जन ही नहीं है, बल्कि इसका सही उद्देश्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास, अनुशासन, स्वावलंबन, चरित्र–निर्माण, समाज और मनुष्यता के प्रति सेवा और समर्पण का भाव है।

दीक्षांत की परम्परा पुरातन है। हमारे यहां गुरुकुल परम्परा में शिक्षा के सम्पन्न होने के बाद दीक्षांत विधि या गुरुमंत्र देने की परम्परा रही है, जिसमें शिक्षा के सर्वांगीण सदुपयोग, व्यक्तित्व उन्मेष, चरित्र निर्माण और समाज सेवा का संदेश दिया जाता था। मात्र किताबी ज्ञान पर्याप्त नही है, जरूरत है अर्जित ज्ञान और कौशल से वैयक्तिक, सामाजिक, राष्ट्रीय एवं वैश्विक विकास का संवाहक होना।

मुझे इस बात की भी प्रसन्नता है कि हमारे विश्वविद्यालयों में इन दिनों पाश्चात्य एवं अंग्रेजों के तौर–तरीकों को बदलकर दीक्षांत समारोह को भारतीय परिवेश और परिधान की साज–सज्जा से जोड़ा गया है। इस दीक्षांत परम्परा को भारतीय जीवन–मूल्यों से भी जोड़ने

की महती आवश्यकता है। ये जीवन मूल्य हैं, छात्र–छात्राओं के सर्वांगीण विकास का संकल्प, सेवा–समर्पण का भाव, वैयक्तिक–पारिवारिक हित साधन के साथ पूरे देश और विश्व–कल्याण की भावना और कर्म–साधना।

इस कार्यक्रम को दीक्षांत समारोह नाम दिया गया है, जिसका अर्थ है, शिक्षा का समापन। लेकिन वास्तव में यह शिक्षा का समापन नही है। यह जीवन की एक नयी शुरूआत है। उपाधि ग्रहण करना मंजिल नही है, सिर्फ एक पड़ाव है।

यह आगे का पथ प्रशस्त करने का माध्यम है। शिक्षा अर्जन के बाद आप लोग जीवन के नये क्षेत्र में प्रवेश करने जा रहे हैं। इसके लिए आप सभी को मेरी शुभकामनाएं। जीवन यात्रा में दीक्षांत समारोह एक विशिष्ट मोड़ भर भी है, अभी कई मंजिलें हासिल करनी हैं। यहां से यह तय होगा कि आप अपनी इच्छा–शक्ति, कौशल एवं योग्यता से कितना उत्कर्ष पा सकते हैं।

यह सुखद संयोग है कि आज देश की बहुसंख्यक आबादी युवा है। भारत इसी युवा शक्ति, युवा सपनों, युवा संकल्पों, नव ऊर्जा के साथ विकास और चहुमुंखी प्रगति के पथ पर अनवरत आगे बढ़ रहा है। देश का वर्तमान और भविष्य इसी युवा पीढ़ी पर निर्भर है। आप संकल्पबद्ध होकर अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। आज भारतीय युवाओं के ज्ञान और कौशल का पूरे विश्व में वर्चस्व है। भारतीय वैज्ञानिक, डॉक्टर, इंजीनियर, प्रबंधक, शिक्षक और सूचना तकनीक के विशेषज्ञ पूरे विश्व में अपने अर्जित ज्ञान और कौशल से कर्म कर राष्ट्र की कीर्ति बढ़ा रहे हैं।

स्वामी विवेकानंद ने कहा था '' उठो, जागो और तब तक मत रुको, जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाये। '' युवा साथियों, उठो, जागो और संकल्प और अपने अध्ययन से आकाश छू लो। यहां से निकल कर भारत की युवा प्रतिभाएं देश–विदेश में राष्ट्र के प्रचार–प्रसार में सहभागी बनेगीं। ऐसा मुझे विश्वास है।

'' कौन कहता है कि,

आकाश में सुराख नहीं हो सकता,

एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारो ‘‘

दुष्यंत का यह कथन निश्चय ही प्रेरणादायक है। विकास और उत्कर्ष की अपार संभावनाओं का आकाश खुला है। दृढ़ संकल्प और एकजुट कर्मसाधना की जरूरत है। शैक्षिक एवं कौशल की उपलब्धियों के साथ हमें सामाजिक एवं मानवीय दायित्वों का भी बोध होना चाहिए।

हमारे प्रदेश में जल की कमी है। पूरे देश और विश्व में जल संकट बढ़ रहा है। ऊर्जा संरक्षण, पौधारोपण, वन संरक्षण हमारे वर्तमान की ही नही, भावी पीढ़ियों के लिए भी चुनौती है।

गत 26 नवम्बर को पूरे देश में 70 वां संविधान दिवस मनाया गया। आपको बताना चाहता हूँ कि संविधान हमारा मार्गदर्शक है। हमारा मूल ग्रन्थ है। संविधान की प्रस्तावना में राष्ट्र की मूल भावना का उल्लेख है। संविधान ने हमें

मौलिक अधिकार दिये हैं। संविधान के अनुच्छेद 51 क में हमारे द्वारा किये जाने वाले कर्त्तव्यों को परिभाषित किया गया है। मौलिक अधिकार और कर्त्तव्य, यह दोनों ही संविधान के प्रमुख स्तम्भ हैं। मौलिक अधिकारों की तो हम बात करते हैं, लेकिन आवश्यकता है कि हम हमारे कर्त्तव्यों को जानें, समझें और उनके अनुरूप ही अपना कार्य और व्यवहार करें।

आप लोग युवा हैं। राष्ट्र निर्माण में आपको महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। इसलिए संविधान में प्रदत्त कर्त्तव्यों को आप लोग आचरण में लाकर आगे बढ़ें। यदि हम सभी ने ऐसा प्रयास किया तो निश्चित तौर पर भारत देश को आगे बढ़ाने में और स्वयं के जीवन को भी प्रोनन्त करने में यह कदम बेहतरीन साबित होगा।

आमजन को संविधान की जानकारी होना आवश्यक है। राष्ट्रीय एकता, अखण्डता व सामाजिक समस्सता के लिए कर्त्तव्यों का निर्वहन करना होगा। मैं चाहता हूं कि

विश्वविद्यालायों में युवाओं को मूल कर्त्तव्यों का ज्ञान कराने के लिए अभियान चलाया जाये। देश की युवा पीढी को मूल कर्त्तव्यों के बारे में बताया जाना आवश्यक है। संविधान के अनुच्छेद 51 क पर विचार – विमर्श करने के लिए गोष्ठियां व सेमीनार आयोजित की जायें।

आज हमें संकल्प लेना है कि हम प्राकृतिक परिवेश एवं संसाधनों के संरक्षण एवं संवर्द्धन के लिए पूरी तरह सजग और सक्रिय रहेंगे। मुझे प्रसन्नता है कि यह विश्वविद्यालय सामाजिक दायित्वों के निर्वहन के लिए पहल कर रहा है। पहले ''मोहामी'' गांव को तथा अब ''नरवर'' गांव को विकास की दृष्टि से गोद लिया गया है। इससे गांव की समस्याओं का त्वरित निस्तारण होने के साथ ही ग्राम्य जीवन अधिक विकसित एवं सुविधापूर्ण होगा साथ ही युवा गांव से जुड सकेंगे।

यहां छात्र–छात्राओं ने राजस्थानी टच वाली भारतीय पोशाक में पदक एवं उपाधियाँ ग्रहण की हैं। आप लोगों के दमकते चेहरों को देखकर मैं गौरवान्वित हो रहा हूं। आप सभी को एक बार पुनः बधाई। आप सदैव प्रगति के पथ पर आगे बढ़ते रहें, ऐसी मैं, शुभकामना करता हूँ।

धन्यवाद। जय हिन्द।